nbt.india
एकः सूते सकलम्

साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

दिसंबर 2013 वर्ष 18, अंक 12

जन्मदिन स्मरण : 30 दिसंबर (1887)

कन्हैयालाल माणिकलाल मुनशी : संस्कृति-दूत

इमर्सन ने कहा था–"कोई भी संस्था अपने संस्थापक की लंबी छाया होती है।" भारतीय विद्या भवन के संस्थापक कन्हैयालाल माणिकलाल मुनशी के संबंध में यह कथन उपयुक्त बैठता है। कन्हैयालाल स्वतंत्रता सेनानी थे, बंबई प्रांत और केंद्रीय मंत्रिमंडल में मंत्री थे, राज्यपाल रहे, अधिवक्ता थे, लेकिन उनका नाम सर्वोपरि भारतीय विद्या भवन के संस्थापक के रूप में ख्यात है। 7 नवंबर, 1938 को भारतीय विद्या भवन की स्थापना के समय उन्होंने एक ऐसे स्वप्न की चर्चा की थी जिसका प्रतिफल यह भा.वि.भ. होता– यह स्वप्न था वैसे केंद्र की स्थापना का, 'जहाँ इस देश का प्राचीन ज्ञान और आधुनिक बौद्धिक आकांक्षाएँ मिलकर एक नए साहित्य, नए इतिहास और नई संस्कृति को जन्म दे सकें।'

कन्हैयालाल जी जड़ता के विरोधी और नवीनता के पोषक थे। उनकी नजर में 'भारतीय संस्कृति कोई जड़ वस्तु नहीं थी।' वे भारतीय संस्कृति को 'चिंतन का एक सतत प्रवाह' मानते थे। वे इस विचार के पोषक थे कि अपनी जड़ों से जुड़े रहकर भी हमें बाहर की हवा का निषेध नहीं करना चाहिए। वे अपनी लेखनी में भी सांस्कृतिक पुनर्जागरण की बात कहते रहते थे।

पृ. सं. 2, कॉलम 1 पर जारी...

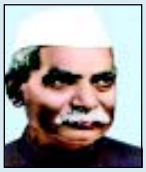

जो काम आज एक व्यक्ति करता है या कर सकता है, शिक्षा पाकर उसमें उस काम को और भी अच्छे तरीके से करने की योग्यता आ सके, यही शिक्षा का सही अर्थ है। ...शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि जो जिसके जिम्मे है, वह उस काम को ज्यादा खूबी के साथ बेहतर तरीके से अदा कर सके, पूरा कर सके।

–डॉ. राजेंद्र प्रसाद, भारत के प्रथम राष्ट्रपति
जयंती, 3 दिसंबर (1884) पर स्मरणस्वरूप

जन्मदिन, 18 दिसंबर (1887) पर स्मरणस्वरूप

'भोजपुरी के शेक्सपियर' : लोककवि भिखारी ठाकुर

रैदास और कबीरदास की परंपरा की एक कड़ी, भिखारी ठाकुर पाँच दशकों के अपने लंबे नाट्य और कविता-गीत लेखन की बदौलत 'भोजपुरी के शेक्सपियर' बने और समादृत हुए। वे 'लोककवि' के रूप में तो ख्यात थे ही, लोक नाटककार, अभिनेता, नाट्य निर्देशक, लोक संगीतकार, सूत्रधार और नर्तक भी थे। सो, ऐसे बहुआयामी प्रतिभा को सही ही भोजपुरी समाज अपना 'लीजेंड' मानता है।

18 दिसंबर, 1887 को बिहार के कुतुबपुर गाँव में पैदा हुए भिखारी ने शिक्षा तो नाममात्र की पाई थी, पर उनमें मौलिकता का ऐसा प्रवाह था कि वे भोजपुरी के सबसे बड़े साहित्यकार बन गए।

दरअसल, भिखारी उस समय और समाज में पैदा हुए थे जब देश परतंत्र था और देश सामाजिक एवं धार्मिक बुराइयों के

पृ. सं. 2, कॉलम 2 पर जारी...

नि. : 5-12-2013

अलविदा मंडेला! आप हमेशा याद रहेंगे

मेरा आकलन मेरी सफलताओं से मत कीजिए। मेरा आकलन इस बात से करें कि कितनी बार मैं गिरा और फिर उठकर खड़ा हुआ।

–नेल्सन मंडेला, दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति

किताबों के संग चलो, एक नया सूरज उगा लो!

वे गुजराती और अँग्रेजी के अच्छे लेखक थे, लेकिन राष्ट्रीय हित में हमेशा हिंदी के पक्षधर रहे। उन्होंने 'हंस' पत्रिका के संपादन में प्रेमचंद का सहयोग किया। वे राष्ट्रीय शिक्षा के समर्थक थे। वे पश्चिमी शिक्षा के अंधानुकरण का विरोध करते थे। मंत्री के रूप में उनका एक महत्वपूर्ण कार्य रहा—वन महोत्सव आरंभ करना। वृक्षारोपण के प्रति वे काफी गंभीर थे।

मुनशी जी वस्तुतः और मूलतः भारतीय संस्कृति के दूत थे। सांस्कृतिक एकीकरण के बिना उनकी नजर में किसी भी सामाजिक-राजनीतिक कार्यक्रम का कोई महत्व नहीं था।

मकड़जाल में फँसा था। उस समय माँ-बाप अपनी छोटी-छोटी बच्चियों तक का अधेड़ या बूढ़ों से ब्याह कर दे रहे थे। समाज में सामंती मानसिकता थी और जातिवाद का नासूर फैला था। तभी उन्होंने सामाजिक चेतना जगाने वाले गीत रचने शुरू किए और इसे गली-मोहल्लों में जा-जाकर गाने लगे। वे अपनी बात गीत-दोहों-कविताओं के माध्यम से कह रहे थे जिसमें समाज सुधार की ध्वनि थी और भक्ति का पुट भी। उनके नाटकों में मुख्य हैं : बिदेशिया, गबर घिचोर, विधवा-विलाप आदि। उनका निधन 10 जुलाई, 1971 को हुआ।

लघुकथा

कड़वाहट

कमलचन्द वर्मा, डॉ. आंबेडकरनगर, महू छावनी, म.प्र.

शांतिवन में महात्मा भृगु का आश्रम था। उसमें दस विद्यार्थी रहते थे। वे वहाँ रहकर गुरु जी की सेवा करते और विद्याध्ययन करते थे। विद्यार्थियों में रोहित नामक विद्यार्थी बड़ा गुरु-भक्त, बुद्धिमान और आज्ञाकारी था। उसके गुणों के कारण भृगु उससे विशेष स्नेह करते थे। इस कारण कुछ विद्यार्थियों को रोहित से ईर्ष्या होती थी। एक दिन विक्रम और हठीसिंह नाम के विद्यार्थियों ने मिलकर एक षड्यंत्र रचा। इसकी भनक किसी को नहीं हो पाई।

एक वटवृक्ष के नीचे महात्मा भृगु विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाते थे। पाठ शुरू करने के पूर्व वे रोहित से पानी मँगाकर पीते थे। एक दिन जब रोहित ने उन्हें पानी पिलाया तो उन्होंने बुरा मुँह बनाया। पानी बेहद कड़वा था। उनका जी मितलाने लगा। उन्हें उल्टियाँ हुईं। उनकी बुरी हालत देखकर रोहित को चिंता हुई। उसने पूछा, "क्या हुआ गुरुदेव?"

भृगु ने घबराहट भरे स्वर में कहा, "बेटा, पानी बेहद कड़वा है। लगता है, नीम का घोल है।"

"गुरु जी, ऐसा कैसे हो गया? सुबह मैंने साफ पानी भरा था!"

वह अत्यधिक घबरा गया। काँपने लगा, आँसू बहाने लगा, जैसे उससे बड़ा अपराध हो गया हो। भृगु रोहित को अच्छी तरह जानते थे। वे समझ गए कि दोष रोहित का नहीं है। यह जरूर किसी ईर्ष्यालु विद्यार्थी की शरारत है जो रोहित को गुरु की नजरों से गिराना चाहता है। उन्होंने अपने को सँभालते हुए कहा, "रोहित बेटे, दुखी मत हो। मैं जानता हूँ, यह तुमने नहीं किया। तुमसे ईर्ष्या रखने वाले विद्यार्थी का काम है। मुझे लगता है, मेरी शिक्षा में कोई कमी रह गई। मैं यह नहीं सिखा पाया कि ईर्ष्या के भाव पतन की ओर ले जाते हैं। ईर्ष्या से सद्गुण नष्ट होते हैं। इससे व्यक्ति असफल होकर दुखभरा जीवन जीता है। मनुष्य को ईर्ष्या की कड़वाहट से बचना चाहिए।"

इतना कहते-कहते उनका गला भर आया। गुरु जी की यह हालत देखकर विक्रम और हठीसिंह को अपराध-बोध हुआ। उन्हें अपने पर बड़ी ग्लानि हुई। वे दोनों गुरु जी के चरणों में गिर गए। अपना अपराध स्वीकार किया और इसके लिए उनसे क्षमा-याचना की।

श्रद्धांजलि

लेखक, संपादक, स्वतंत्रता सेनानी एवं साक्षरता प्रहरी **जमुना प्रसाद कसार** का 31 अक्तूबर, 2013 को दुर्ग में निधन हो गया। वे 87 वर्ष के थे। सन् 1984 में प्राचार्य पद से सेवनिवृत्त जमुना प्रसाद जी के कविता, कहानी एवं निबंध की अनेक पुस्तकें तथा एक उपन्यास प्रकाशित है। जमुना प्रसाद जी ने जीवनभर साक्षरता-प्रसार के क्षेत्र में काम किया। इस हेतु उन्हें राज्य संसाधन केंद्र, इंदौर द्वारा 1999 में नवसाक्षर सम्मान तथा राष्ट्रीय साक्षरता संसाधन केंद्र, नई दिल्ली द्वारा सन् 2000 में साक्षरता सम्मान प्रदान किया गया था। वे *झाँपी* नामक एक अनियतकालीन पत्रिका के संपादक थे। न्यास-परिवार की ओर से उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि!

भारतवर्ष केवल हिंदुओं का देश नहीं है। यह तो मुस्लिम, ईसाई और पारसियों का भी देश है। यह देश तभी समुन्नत और शक्तिशाली हो सकता है, जब भारतवर्ष की विभिन्न जातियाँ और यहाँ के विभिन्न संप्रदाय पारस्परिक सद्भावना और एकात्मकता के साथ रहें। जो लोग इस एकता को भंग करते हैं, वे देश के तथा अपने समुदाय के दुश्मन हैं।

—महामना मदनमोहन मालवीय

जयंती, 25 दिसंबर (1861) पर स्मरणस्वरूप

अच्छी पुस्तक है कल का सूरज, आओ इनको नमन करें!

पुण्य तिथि स्मरण : 12 दिसंबर (1964)

मैथिलीशरण गुप्त : प्राचीन भारत के गौरव-गाता

मैथिलीशरण गुप्त को आधुनिक भारत के प्रथम राष्ट्रकवि के रूप में सम्मान प्राप्त है। वस्तुतः गाँधी जी ने 1938 में उन्हें सर्वप्रथम 'राष्ट्रकवि' कहा था। 'द्विवेदी युग' के वे प्रमुख कवि हैं। उन्हें 'आधुनिक हिंदी-काव्य का निर्माता' कहा जाता है। राष्ट्रीय आंदोलन से उनके काव्य का गहरा संबंध रहा है। उनकी कविता का मूल स्वर राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक है। गुप्त जी पौरुष एवं आस्था के कवि थे। उनकी कविता *नर हो, न निराश करो मन को, कुछ काम करो, कुछ काम करो* आज भी लोगों के मन-मस्तिष्क को ओज से भर देती है। इन्होंने प्राचीन भारत का गौरव-गान अत्यंत ओजस्वी वाणी में किया है। खड़ी बोली हिंदी के स्वरूप निर्धारण और विकास में इनका बड़ा हाथ रहा है। इन्हें भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया था। वे दस से अधिक वर्षों तक राज्यसभा के मनोनीत सदस्य भी रहे। इनका जन्मस्थान चिरगाँव, झाँसी, उ.प्र. है। हिंदी के अलावा संस्कृत, बँगला, उर्दू पर भी अधिकार। महत्वपूर्ण कृतियाँ—*साकेत, द्वापर, यशोधरा, भारत-भारती, पंचवटी* आदि। 3 अगस्त, 1988 को उनके जन्म दिवस को 'कवि-दिवस' के रूप में घोषित किया गया था। जन्म वर्ष 1886।

कुछ आरजू नहीं है, है आरजू तो यह है
रख दे कोई ज़रा-सी, ख़ाके वतन कफ़न में।

पुण्य तिथि, 19 दिसं. (1927) पर स्मरणस्वरूप **—अशफाकउल्ला खाँ**

यूनीसेफ—सृजन दिवस, 11 दिसंबर

यूनीसेफ (UNICEF—युनाइटेड नेशंस चिल्ड्रेंस फंड) संयुक्त राष्ट्र का बाल केंद्रित एक कार्यक्रम है। इसका मुख्यालय न्यूयॉर्क में है। यह विकासशील देशों में बच्चों और माँओं के लिए लंबी अवधि की मानवीय और विकासात्मक सहायता उपलब्ध कराता है। इस कार्यक्रम का सृजन संयुक्त राष्ट्र की आम सभा ने 11 दिसंबर, 1946 को किया था। इसका तत्कालीन उद्देश्य था द्वितीय विश्व युद्ध में जिन देशों में विध्वंस लीला खेली गई वहाँ के बच्चों के लिए आपातकालीन भोजन एवं स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराना। 1954 में यूनीसेफ संयुक्त राष्ट्र की व्यवस्था का एक स्थायी अंग बन गया। UNICEF अपने सृजन के समय युनाइटेड नेशंस इंटरनेशनल चिल्ड्रेंस इमर्जेंसी फंड था, पर वही संक्षिप्त रूप आज भी जारी है।

पुण्य तिथि स्मरण : 15 दिसंबर (1950)

संस्मरण

ऐसे थे सरदार पटेल

सरदार पटेल ने वकालत भी की थी। बात तब की है जब वे 33 वर्ष के थे।

अदालत में बहस चल रही थी। हत्या का मामला था। जरा-सी असावधानी हुई कि अभियुक्त फाँसी पर। तभी वकील साहब के नाम का एक तार आता है। क्षण के सहस्रवें भाग जितने समय के लिए दृष्टि अक्षरों पर से फिसलती है, फिर तार जेब में जाता है और बहस तेज हो उठती है। दिन के अंत में साथी पूछते हैं—

"कैसा तार था?"

"पत्नी की मृत्यु हो गई।"

"क्या!!" अचरज से हतप्रभ मित्र काँप-काँप उठते हैं, "और तुम बहस करते रहे?"

"वह तो चली ही गई थी। अभियुक्त को भी क्यों जाने देता?"

ऐसे थे सरदार पटेल!

"...वे शक्ति की एक ऐसी मीनार के रूप में याद किए जाएँगे, जो विचलित हृदयों में प्राण फूँक देती है।"

—पं. नेहरू, 15 दिसंबर, 1950 को अपनी श्रद्धांजलि देते हुए

"हमें अपने राजनीतिक लोकतंत्र को सामाजिक लोकतंत्र भी बनाना है। बिना सामाजिक लोकतंत्र के राजनीतिक लोकतंत्र नहीं टिक सकता ... सामाजिक लोकतंत्र जीवन की एक पद्धति है, जिसके सिद्धांत हैं—स्वतंत्रता, समानता और भातृत्व।"

"हमेशा पुराने को सही मानते रहना गलत है। ...बदलते समय के मुताबिक परिस्थिति में भी बदलाव आना चाहिए। हमारे आचार-व्यवहार में भी परिवर्तन आना चाहिए। यदि हमलोगों ने वैसा नहीं किया तो हम परिस्थिति का मुकाबला करने के बिलकुल लायक नहीं रहेंगे। ...समय तो बदल जाएगा, लेकिन हम वहीं-के-वहीं रह जाएँगे।"

पुण्य तिथि, 6 दिसं. (1956) पर स्मरणस्वरूप **—डॉ. भीमराव आंबेडकर**

भारत की एकता बनाए रखने के लिए एक राष्ट्रभाषा जरूरी है, और यह हिंदी ही हो सकती है, क्योंकि यह भाषा देश की आम जनता आसानी से समझती है।

जन्मदिन स्मरण : 1 दिसंबर (1885) **—आचार्य काका साहब कालेलकर**

प्रसन्नता में ईश्वर का निवास है। —चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, ज. : 10-12-1878 नि. : 25-12-1972

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत कुछ पुस्तकें

केसर की महक

बचिंत कौर पृ. 16 ₹ 13.00

अपना बच्चा न होने की स्थिति में एक ग्रामीण दंपति शहर जाकर अनाथालय से एक बच्चा गोद ले लेता है जिससे घर भर में खुशी तैर जाती है। ISBN 978-81-237-5710-0

देवपुर की बुआ

वीरेन्द्र तंवर पृ. 20 ₹ 9.00

लीला दाई ने सरपंच पद जीत कर पुराने सरपंच को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। बताती है यह सरल रचना। ISBN 81-237-3765-3

दुमेला की विमला

माल चंद तिवाड़ी पृ. 16 ₹ 9.00

यह कहानी महिलाओं के स्वाभिमान का जीवंत चित्र प्रस्तुत करती है। 12वीं पास विमला ने पूर्व सरपंच की तरकीब को कामयाब नहीं होने दिया। ISBN 978-81-237-5470-3

रामो चंडी

चंदन नेगी

अनु. : सुभाष नीरव पृ. 18 ₹ 12.00

पंजाबी लेखिका की एक मार्मिक रचना। एक ही मुहल्ले में एक ही नाम की पाँच औरतें रहती हैं। ऐसे में रामो चंडी को जानना बेहद जरूरी हो जाता है। ISBN 81-237-4676-8

मिनीमाता

परदेशीराम वर्मा पृ. 20 ₹ 6.00

मिनीमाता छत्तीसगढ़ की प्राण थी। कैसे वह सांसद पद तक पहुँची। इस रोचक सफर को जानना सुखद लगेगा। ISBN 81-237-3741-6

दयाबाई

शरद सिंह पृ. 14 ₹ 9.00

महिलाएं भी परिवार का पालन-पोषण कर सकती हैं, अपने पति का सहयोग भी कर सकती हैं– यही इस कहानी में बताया गया है।

ISBN 81-237-664-4

किरन

राजेश शुक्ला पृ. 14 ₹ 9.00

यह कहानी एक ऐसी संवेदनशील किशोरी की है जो प्रकृति को प्रेम करने वाली है। प्रकृति के प्रति उसकी संवेदनशीलता को देखकर मैडम गाँव के लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करती हैं। ISBN 978-81-237-5455-0

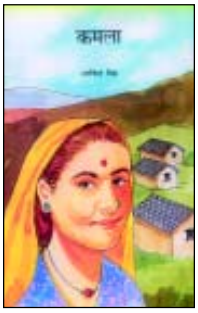

कमला

अरविन्द मिश्र पृ. 16 ₹ 9.00

कमला ने गांव की महिलाओं को एकत्र कर साक्षरता केंद्र की शुरुआत की। महिलाओं की एकता ने अपने मंडल को कैसे अपने प्रदेश में सर्वश्रेष्ठ बना दिया, पढ़िए।

ISBN 81-237-4771-3

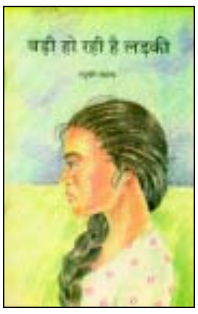

बड़ी हो रही है लड़की

रघुवीर सहाय पृ. 16 ₹ 7.00

लड़की किन परिस्थितियों में कैसे और किस तरह अपना विकास करती है। ऐसे ही सतरंगी रंगों को इस किताब में समेटा गया है।

ISBN 81-237-3114-0

बूढ़ी काकी

प्रेमचंद; रूपां. : सुभाष चंदर पृ. 20 ₹ 9.00

किस प्रकार भतीजा काकी को बहला-फुसला कर जायदाद अपने नाम कर लेता है और खाने को रोटी भी नहीं देता। महान कथाकार की दिल को छू लेने वाली रचना। ISBN 81-237-4512-5

दुनिया को बदलने का जादू है किताब, चलो किताब पढ़ें!

तीन कविता : तीन रंग

किताब

निर्मला सिंह

सब चीजों में सबसे प्यारी
होती है किताब
उलझे-उलझे हर सवाल का
देती है जवाब।
इसको पढ़कर बन जाता है
मूरख भी विद्वान
अनपढ़ शिक्षित हो जाता है
पा लेता है ज्ञान।
कोई छोटी, कोई मोटी
होती है किताब
कोई कठिन, तो कोई सरल
होती है किताब।
पढ़ना-पढ़ाना, अच्छी आदत
सबसे अच्छा शौक
अध्ययन से बनता इनसान
न कर इससे खौफ़।

बरेली, उ.प्र.

भारत माता को नित्य नमन

नरेश हमिलपुरकर

भारत माता को भक्ति से नित्य नमन करना
सर्वत्र हरा-भरा बाग-बगीचा, चमन करना

शहीदों के मंदिर बने, सदा अमर ज्योति जले
सत्य अहिंसा परम धर्म का महान वतन करना

शांति प्रगति के लिए द्वेष भेद सब भूलकर
हर नर-नारी को अपना प्यारा भाई-बहन करना

कोई भूखा-प्यासा सोए, ना रोगी निरुद्योगी रहे
हर क्षेत्र में रोज नए रोजगार सृजन करना

लक्ष्य हो, संकल्प हो, प्रबल आत्मविश्वास हो
प्राण देकर भी पूरा हर वादा, हर वचन करना

अगर हकीकत में शहीदों का सम्मान है तो
उनकी हर आरजू पूरी, पूरा हर स्वप्न करना

देश धरोहर की सुरक्षा बच्चा-बच्चा करना
मातृभूमि को सदा जान से ज्यादा जतन करना

हे माँ भारती, हम सबको न्यारा प्यारा करना
सबको ज्ञानी बलिदानी, नेक सज्जन करना।

बीदर, कर्नाटक

बात शिक्षा की लगाया करो तुम

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

सदा ज्ञान-लौ जगाया करो तुम
बात शिक्षा की लगाया करो तुम।

हाथ में पकड़ अच्छी पुस्तकें
ज्ञान अपना बढ़ाया करो तुम।

विकास-पथ पर है आगे बढ़ना
पुस्तक-ध्यान लगाया करो तुम।

जहाँ बहती हो अक्षर-धारा
अरे! वहाँ नहा आया करो तुम।

अनपढ़ों को है पढ़ाना अच्छा
पुण्य सदा यह कमाया करो तुम।

सब दानों में विद्यादान उत्तम
बात सबको समझाया करो तुम।

'प्रसाद' शिक्षा विवेक जगाती
पाठ सबको पढ़ाया करो तुम।

सिहाल, कांगड़ा. हि.प्र.

पुस्तक संग चलो, नया सवेरा गढ़ लो!

शिक्षा का है यही आधार
सबके सपने हो जाए साकार
बिना पढ़े है जीवन नीरस
ज्ञान बिना जीवन बेकार।

सुरेंद्र कुमार 'अंशुल', अंबाला शहर, हरियाणा

इंद्रधनुष कितना सुंदर मनभावन है
पुस्तक का हर पन्ना भी अति पावन
इंद्रधनुष तो मन को खुशियाँ देता है
पुस्तक का हर पन्ना, ज्ञान से भर देता है।

रूपनारायण काबरा, जयपुर, राजस्थान

सच्चा मित्र बनाना है
तो बनाओ किताब को
जीवन का मर्म समझना है
तो पढ़ो किताब को।

डॉ. अंजना अनिल, अलवर, राजस्थान

धन्य किताब
पढ़ के जिसे लोग
पाते हैं ज्ञान।

नलिनीकांत
अंडाल, प. बंगाल

मित्रों की मित्र
किताबें, सच्ची मित्र
बनाके देखो।

आनंद बिल्थरे
बालाघाट, म.प्र.

हर पुस्तक वरदान, जीवन बने आसान

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ **सा. सं. : नवं. 2013 :** पूरा अंक ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय है। न्यास की नवीनतम पुस्तकों का परिचय पुस्तकों को पढ़ने की इच्छा जगाता है। इस अंक में लघुकथा का अभाव खटका। लघुकथा साहित्य की सचमुच अनोखी विधा है जो थोड़े में बहुत कुछ कह देती है। कई बार उससे भी ज्यादा, जो हम एक पूरी लंबी कहानी में भी नहीं कह पाते। **साक्षरता संवाद** दिनोंदिन निखरता जा रहा है, इसके लिए बधाई! **रचना सिद्धा,** जयपुर, राजस्थान

☐ पत्रिका सर्वांगीण ज्ञानवर्धक एवं शिक्षाप्रद है। अंक में समाहित सामग्री पठनीय, रोचक, व संग्रहणीय है। नवसाक्षरों के लिए सामग्री अत्यंत प्रेरणादायी व उपयोगी हैं। महान विभूतियों पर सरल व संक्षिप्त लेख बेहद पसंद आए। गिजूभाई बधेका, महात्मा जोतिबा फुले, मौलाना आजाद एवं पं. नेहरू पर लघु आलेख/संस्मरण समयोचित एवं ज्ञानवर्धक थे। नवसाक्षर साहित्यमाला की नवीनतम पुस्तकों की जानकारी मिली।

विजय सिंह बलवान, बुलंदशहर, उ.प्र.

☐ नवंबर अंक मिला। पत्रिका दिन-प्रतिदिन खिलती ही जा रही है। 14 नवंबर बाल दिवस पर सामग्री बहुत मन को भाई। महापुरुषों का परिचय पाकर मन खुश हो गया। पत्रिका साक्षरता का बिगुल बजा रही है। इस अंक की सभी रचनाएँ प्रेरणादायक लगीं।

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर, उ.प्र.

☐ **अक्तू. : साक्षरता संवाद** की सक्रियता से मैं बहुत प्रभावित हूँ। इस पत्रिका का एक-एक शब्द अमृत-वाणी है। कितनी ही नई जानकारी मिलती रहती है। गाँधी जी की इस पंक्ति में ऐसा अकाट्य सत्य परिलक्षित होता है कि यदि हम इस पंक्ति को आत्मसात कर लें तो जीवन ही सार्थक हो जाए–"ऐसे जियो मानो कल तुम्हारी मौत हो जाएगी। ऐसे सीखो मानो तुम हमेशा जीवित रहोगे।" यह पत्रिका हमारे मन के अज्ञानता से भरे अंधकार को हटाकर उसे सदैव ज्योतिर्मय कर प्रेरित करती रहे!

डॉ. नलिनी श्रीवास्तव, भिलाई, म.प्र.

☐ पत्रिका निरंतर मिल रही है। मैं अपनी पुत्रवधू मंजू शर्मा की संस्था 'समर्थ' के माध्यम से इसको नवसाक्षरों तक भी पहुँचा रहा हूँ। पत्रिका में जो पुस्तक परिचय छपता है वह भी स्वयं में एक पठनीय रचना ही होता है। इसे पढ़कर पुस्तक का सार-संक्षेप समझ में आ जाता है। नवसाक्षरोपयोगी पृष्ठ पर प्रकाशित कविताएँ, लघुकथा आदि की अपनी उपयोगिता है जिसका आकलन शब्दों के माध्यम से नहीं किया जा सकता। एक विचार–इन पृष्ठों पर प्रकाशित रचनाओं का अगर संकलन निकाला जाए तो ये रचनाएँ सुरक्षित रहेंगी और इनकी उपादेयता और भी बढ़ जाएगी। कृपया विचारें। **साक्षरता संवाद** के ज्ञान और प्रेरणा का यह अनुष्ठान निरंतर चले यही कामना है। **युगेश शर्मा,** भोपाल, म.प्र.

☐ नवसाक्षरों और साक्षरता से जुड़े तमाम लोगों के लिए **सा. सं.** ज्ञान का भंडार है–प्रेरणा और प्रोत्साहन से परिपूर्ण। आपके प्रयास निश्चित रूप से शिक्षा के सच्चे अर्थों को प्रचारित कर रहे हैं, मेरी बधाई स्वीकारें।

अंतर्मन की गहराइयों से किताबों की महत्ता को पहचानो।
ज़िंदगी की सार्थकता स्वयं जान जाओगे।

डॉ. अंजना अनिल, अलवर, राजस्थान

☐ दीप से दीप / जलाकर / अंधकार को दूर / भगाया जा सकता है / ऐसे ही साक्षर / निरक्षर को अक्षर-ज्ञान देकर / निरक्षरता दूर करने में / सहायक हो सकते हैं।**किशन लाल शर्मा,** आगरा, उ.प्र.

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएँ ही भेजें–प्रेरक, उद्‌बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएँ संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएँ कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** *–संपा.*

शिक्षा का सवाल

प्रेमकुमार गौतम, झाँसी, उ.प्र.

सिर्फ है शिक्षा का सवाल
इसलिए जीवन है बदहाल
ठेलेवाला असगर
मिल मजदूर विश्वंभर
सब्जीवाली रजिया
मोटरवाला जगधर
पढ़-लिखकर लें ज्ञान
रहें न पुस्तक से अनजान
पंचरवाला पप्पू
रेहड़ीवाला सत्पू
कपड़ेवाली सजना
बरतनवाली कंगना
चलें जब पढ़ने को स्कूल
चुभे न पग में कोई शूल
सिर्फ है शिक्षा का सवाल
इसलिए जीवन है बदहाल।

हिंदी वर्णमाला सीखो

गिरिवर गिरि गोस्वामी निर्मोही
पंखा रोड, नई दिल्ली

अ से अनार, **आ** से आम
इनके हैं दस रुपये दाम।

इ से इमली, **ई** से ईख
सच मानो सतगुर की सीख।

उ से उल्लू, **ऊ** से ऊँट
आ गई चाय भर लो घूँट।

ऋ से ऋषि, **ए** से एक
एक-एक से बनें अनेक।

ऐ से ऐनक, **ओ** से ओखली
चोर को पकड़ो, छीनो पोटली।

औ से औरत, **अं** से अंगूर
जंगल में रहते लंगूर।

शब्द से नाता जोड़ो

पूरन सरमा, जयपुर, राजस्थान

यही समय का सच है लोगो
सीखो लिखना-पढ़ना
कदम-से-कदम मिला लो अपने
मिलकर आगे बढ़ना;
उमर का बंधन तोड़ो
शब्द से नाता जोड़ो।

नहीं पढ़ने की भूल हमेशा
बहुत बुरी मनमानी
द्वार तुम्हारे शिक्षा लाई
प्यारी भोर सुहानी
उठो सँवारो मंजिल अपनी
सीखो पर्वत चढ़ना;
उमर का बंधन तोड़ो
शब्द से नाता जोड़ो।

यही समय का सच है लोगो
सीखो लिखना-पढ़ना
कदम-से-कदम मिला लो अपने
मिलकर आगे बढ़ना;
उमर का बंधन तोड़ो
शब्द से नाता जोड़ो।

खुशियों का आधार है पुस्तक
जीवन का उपहार है पुस्तक

प्रगति-पथ का द्वार है पुस्तक
उत्तम-अनुपम उपहार है पुस्तक

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/12/2013

हमें पढ़ने की इच्छा है
आसमान को छूना है
थोड़ा-सा सहारा दे दो
हमें आगे बढ़ लेना है।

डॉ. नरेंद्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

पढ़े-लिखे सब भाई-बहन हों
बस्ती-बस्ती घर-घर में
गाँव-गाँव व नगर-नगर में
शिक्षा पहुँचे घर-घर में।

रामगोपाल 'राही', लाखेरी, राजस्थान

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत नवीनतम पुस्तक

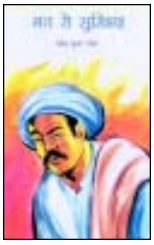

मत रो सुखिया

राकेश कुमार पांडेय

चित्र : दीपक दास पृ. 16 ₹ 12

सुखीराम के खेत में आग लग गई। उसने कर्जा लेकर गन्ने की बुआई की थी। किशोरी बिटिया मुनिया के ब्याह को लेकर वह चिंतित हो उठा। आत्महत्या की कोशिश की। संयोगवश गाँव के प्रधान भरत भइया वहाँ आए तो उन्हें इस अगलगी की जानकारी हुई। उन्होंने उसे ब्लॉक दफ्तर ले जाकर वहाँ जनसंपर्क अधिकारी से मिलवाया। सारी बात सुनकर उन्होंने सुखीराम को समस्या का समाधान बताया। कर्ज के ब्याज माफी के अलावा फसल बीमा योजना एवं खलिहान बीमा पॉलिसी आदि के संबंध में जानकारी दी। सुखीराम को बात समझ में आ गई। अब उसके चेहरे पर मुस्कान थी।

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत
nbt.india
एका: सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेल: office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070